एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!

पाठ का सार

एक गाँव में दुलारी नाम की नाच-गाने का पेशा करने वाली स्त्राी रहती थी। वह दुक्कड़ नामक बाजे पर गीत गाने के लिए प्रसिद्ध थी। उसके कजली गायन का सब लोग सम्मान करते थे। गाने में ही सवाल-जवाब करने में वह बहुत वुफशल थी। एक बार खोजवाँ दल की तरफ से गीतों में सवाल-जवाब करते हुए दुलारी की मुलाकात टुन्नू नाम के एक ब्राह्मण लड़के से हुई। बजरडीहा वालों की तरपफ से मधुर कंठ में टुन्नू ने उसके साथ पहली बार सवाल-जवाब किए। दुलारी ने तब अपने प्रति उसके प्रेम को अनुभव किया था। दुलारी के घर आकर भी टुन्नू चुप रहता। कभी प्रेम को प्रकट नहीं करता था। होली के एक दिन पहले टुन्नू दुलारी के घर आया। उसने खादी आश्रम की बुनी साड़ी दुलारी को दी।

दुलारी ने उसे बहुत डाँटा और साड़ी फेंक दी। टुन्नू अपमानित होकर रोने लगा। उसके आँसू दुलारी के द्वारा फेंकी साड़ी पर टपकने लगे। उसने अपना प्रेम पहली बार प्रकट किया और कहा कि उसका मन रूप और उम्र की सीमा में नहीं बँधा है। टुन्नू के जाने के बाद दुलारी ने साड़ी पर पड़े आँसुओं के धब्बों को चूम लिया। उसने अपनी ढलती उम्र में प्रेम को पहली बार इतने करीब से महसूस किया था। टुन्नू की लाई साड़ी को उसने अपने कपड़ों में सबसे नीचे रख लिया। टुन्नू और अपने प्रेम को आत्मा का प्रेम समझते हुए भी दुलारी चिंतित थी।

टुन्नू के जाने के बाद उसने खाना बनाना शुरू किया ही था कि मोहल्ले का फेंकू नाम का एक परिचित आदमी आ गया, वह दुलारी पर अपना अधिकार समझता था। उसने सुंदर विदेशी साड़ियों का बंडल दुलारी को देना चाहा। उस समय दुलारी को उसका आना बहुत बुरा लगा। नीचे विदेशी कपड़ों को जलाने के लिए वस्त्रों को इकट्ठा करते जुलूस की भारत जननि तेरी जय, तेरी जय हो, की आवाज सुनकर दुलारी ने फेंकू का लाया विदेशी साड़ियों का बंडल नीचे फेंक दिया। दूसरी बार जब फिर दुलारी ने कुछ और साड़ियों को फेंकना चाहा, तो फेंकू ने उसका हाथ पकड़ लिया और खिड़की बंद कर दी।

नीचे से सरकारी गवाह बने पुलिस के एक आदमी अली सगीर ने देख लिया। दुलारी ने फेंकू को झाड़ू मार-मार कर घर से निकाल दिया तो जुलूस में शामिल टुन्नू के विरुद्ध अली सगीर ने फेंकू का साथ दिया। जुलूस के टाउन हा ॅल पहुँचने पर पुलिस ने टुन्नू को गालियाँ दी और विरोध करने पर पसली में जूतों की ठोकर मार-मारकर खत्म कर दिया। अंग्रेज सैनिकों ने अस्पताल का बहाना कर मरे टुन्नू को वरुणा नदी में फेंक दिया। उधर नीचे आँगन में फेंकू को भगाकर दुलारी पड़ोसिनों से यह कह ही रही थी कि उसका टुन्नू से कोई संबंध नहीं है। इतने में झिंगुर नाम के एक पड़ोसी बच्चे ने टुन्नू के मारे जाने की खबर दी। दुख, क्रोध और आश्चर्य से भरी दुलारी रोने लगी।

उसने टुन्नू की दी साड़ी पहनी और उसके मारे जाने का स्थान झिंगुर से पूछकर वहाँ जाने को तैयार हो गई। उसी समय फेंकू थाने के मुंशी के साथ आया। उसने दुलारी को थाने में होने वाली अमन सभा में गाने के लिए कहा।

अगले दिन शाम को टाउन हाॅल में अमन सभा ने एक समारोह किया। उसमें जनता का कोई प्रतिनिधि नहीं था। दुलारी को उसमें बुलाया गया। उसे मौसम के अनुसार गीत गाने के लिए मजबूर भी किया गया। अपने और प्रेमी के मारे जाने के स्थान पर गाते हुए दुलारी की आवाश दर्द से भरी थी। एक उदास हँसी के साथ उसके गाने के बोल थे- 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा, कासों मैं पूछूँ?' गीत गाते हुए उसने लोगों को इस बात का अहसास करा दिया था कि टुन्नू के मारे जाने में अली सगीर का हाथ है।

टुन्नू के मारे जाने की आँखों देखी खबर लाने और लिखने वाले रिपोर्टर को एक अखबार के प्रधान संवाददाता ने अयोग्य कहा। उसे डाँटा और मुख्य संपादक से उसकी शिकायत भी की। मुख्य संपादक ने भी पूरी खबर सुनकर 'सच्ची' होते हुए भी छपने लायक नहीं मानी। वह जानता था कि खबरों की तह तक जाने से अखबार नहीं चलते। उससे विरोध होता है और कार्यालय बंद हो जाते हैं।